Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय लोक साहित्य (गढ़वाली, बुन्देली, हरियानी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, निमाड़ी, राजस्थानी)

डॉ. रमेशकुमार टण्डन*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शास0 महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – भारत को समग्ररूपेण समझना हो, तो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवासरत लोगों के जन जीवन, उनकी जीवन-शैली एवं उनके मध्य प्रचलित संस्कृति को बेहद करीब से अवलोकन करना आवश्यक होता है। परन्तु भौगोलिक क्षेत्र इतना विस्तृत और दुर्गम है कि सुगमता से सभी स्थानों तक पहुँच पाना सम्भव नहीं हो सकता। अत: विद्धानों द्वारा समय-समय पर लोक साहित्य के रूप में लिखित ग्रन्थों के अध्ययन से सम्पूर्ण भारत के जन जीवन को समझा जा सकता है। यहाँ गढ़वाली, बुन्देली, हरियानी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, निमाड़ी, राजस्थानी लोक साहित्य का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

गढ़वाली लोक साहित्य – यह बोली गढ़वाल और टेहरी जिले में बोली जाती है। सर्वप्रथम तारादत्त गैरोला ने गढ़वाली खण्डकाव्य की रचना की तथा कुछ लोकगाथाओं और कथाओं को 'हिमालयन फोकलोर' में प्रस्तुत भी किया। गढ़वाल क्षेत्र में लोक गाथाओं के तीन रूप पायेजाते हैं – जागर वार्ता, पवाड़ा और चैती। जागर में धार्मिक, पवाड़ा में वीर तथा चैती में प्रेम संबंधी गाथाएँ होती हैं। डॉ0 गोविन्द चातक ने तीनों प्रकार की गाथाओं का संकलन किया है। श्री बलदेव शर्मा ने लोक-गाथा पवाँड़ों में 'जसी' और 'रामी' को प्रस्तुत किया तथा श्री शिवनारायण सिंह विष्ट ने 'गढ़ समरियन' पवाँड़ों का संकलन किया है। गिरिजादत्त नैथाड़ी ने अपनी पुस्तक 'मांगल संग्रह' में तथा पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने 'कविता कौमुदी' में गढ़वाली गीतों का संकलन किया है। डॉ0 गोविन्द चातक ने 'गढ़वाली लोकगीत' पुस्तक लिखी, जिसमें लोकगीतों का हिन्दी में अनुवाद भी दिया गया है। अम्बादत्त डंगवाल ने 'गढ़वाली कहावत संग्रह' और शालिग्राम वैष्णव ने 'गढ़वाली पखणा' प्रस्तुत किया। पं0 गंगादत्त उप्रेती ने सर्वाधिक कार्य करते हुए इस क्षेत्र के कहावतों का संग्रह कर अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। समीक्षा और विवेचन की दृष्टि से मोहनलाल बाबुलकर का 'गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन', डॉ0 गोविन्द चातक का 'गढ़वाली लोक गीत : एक सांस्कृतिक अध्ययन', डॉ0 जनार्दन प्रसाद काला का 'गढ़वाली भाषा और लोक साहित्य' और डॉ0 शिवानन्द नौटियाल का 'गढ़वाल के लोक नृत्य-गीत' ग्रन्थ उल्लेखनीय है। डॉ0 नौटियाल के इस ग्रन्थ में होली, खुदेड, चांचरी गीतों का तथा छोपती, घसियारी, छपेली, झोड़ा और बनजारा नृत्यों का उल्लेख मिलता है।

बुन्देली लोक साहित्य – यह बोली उत्तरप्रदेश के झाँसी, जालौन, हमीरपुर जिले तथा मध्यप्रदेश के ग्वालियर, भोपाल, सागर, ओरछा, जबलपुर, टीकमगढ़ जिलों में बोली जाती है। बुन्देली लोक साहित्य के क्षेत्र में श्री कृष्णानन्द गुप्त, पं0 शिवसहाय चतुर्वेदी, पं0 उमाशंकर शुक्ल, हीरा देवी चतुर्वेदी ने साहित्य भंडार में वृद्धि की है। पं0 गौरी शंकर द्विवेदी ने 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ' में अनेक लोक गीतों का संग्रह करके व्याख्या भी की है। देवेन्द्र सत्यार्थी ने इसी ग्रन्थ में सात लोक गीतों की व्याख्या की है। बुन्देलखण्ड में फाग गाने वालों में ईसुरी, गंगाधर, भुजवल और ख्याली कानाम प्रसिद्ध है। श्री कृष्णानन्द गुप्त ने प्रसिद्ध लोक कवि ईसुरी की फागों का संकलन किया है। श्री गौरी शंकर द्विवेदी ने ईसुरी की फागों पर 'ईसुरी प्रकाश' लिखा है। प्रो0 श्रीचन्द जैन ने अपनी पुस्तक 'विन्ध्य के लोक कवि' में ईसुरी और गंगाधर का प्रामाणिक वर्णन किया है। डॉ0 शंकर लाल शुक्ल ने अपने शोध प्रबन्ध 'बुन्देलखण्ड के लोक गीत तथा लोक कवि ईसुरी का विशेष अध्ययन' में बुन्देली लोक गीतों का वर्णन किया है। बुन्देलखण्ड में साहित्यिक और गीतात्मक प्रतियोगिताओं को 'फड़' कहा जाता है। फागों, ख्यालों, कीर्तनों, सैरों, लावनियों और कवित्तों पर यहाँ 'फड़' लगा करते हैं। 'बुन्देलखण्डी फड़ साहित्य में सैरबाजी का विशिष्ट चलन है जो कि ऐसी रागिनी है जिसे 'दायरा' नामक लोकवाद्य पर गाया जाता है।'[1] डॉ0 गणेशी लाल बुधौलिया ने 'बुन्देलखण्डी फड़ साहित्य' शीर्षक पर शोध कार्य किया है। बुन्देली लोक कथाओं पर पं0 शिव सहाय चतुर्वेदी के छ: संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। बुन्देली लोक साहित्य पर डॉ0 राम स्वरूप श्रीवास्तव 'स्नेही' का शोध प्रबन्ध सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, जिसके चतुर्थ अध्याय में बालकों एवं स्त्रियों के लोक गीतों का वर्णन है और पंचम अध्याय में संस्कार गीत, जाति गीत, व्रत गीतों का वर्णन है।

हरियानी लोक साहित्य – वर्तमान हरियाणा राज्य की बोली को हरियाणवी कहते हैं। इसे बाँगरू अथवा हरियानी भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत रोहतक और करनाल जिले, संगरूर की जिंद तहसील, पूर्वी हिसार और दक्षिणी पूर्वी पटियाला आता है। श्री राजा राम शास्त्री ने 'हरियाना की लोक कथाएँ' तथा 'हरियाना लोकमंच की कहानियाँ' नामक पुस्तक में हरियानी लोक कथाओं का संकलन किया है। दूसरी पुस्तक में रानी पिंगला, वनदेव, कुँवर निहाल दे जैसी ऐतिहासिक कहानियाँ संग्रहित है। डॉ0 शंकर लाल यादव ने 'हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य' शीर्षक से शोध प्रबन्ध लिखा है। इस शोध प्रबन्ध में तृतीय अध्याय से छठवें अध्याय में लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा, लोक नाट्य की विशद मीमांसा की गई है। डॉ0 यादव की अन्य पुस्तक 'हरियाणा लोक नाट्य संगीत' में इस प्रदेश के लोक नाट्यों का वर्णन है। गीता भार्गव ने 'हरियाण के लोक गीतों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक तत्त्व', श्री लाल चन्द ने 'पंजाब और हरियाणा के प्रमुख व्रत और

उनकी कथाएँ', श्री वेदराम यादव ने 'हरियाणा के लोक गीतों में प्रेम निरूपण', सुशीला कुमारी ने 'हरियाणा प्रदेश के वैवाहिक गीत' तथा सुमित्रा सिंह ने 'हरियाणवी लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन' शोध प्रबन्ध में इस क्षेत्र के लोक साहित्य का सांगोपांग विवेचन प्रसतुत किया है।

बघेली लोक साहित्य – बघेली का प्रधान क्षेत्र रीवाँ और उसके आसपास का क्षेत्र है। बघेली लोक साहित्य का लेखन कार्य करने वालों में प्रो0 श्रीचन्द जैन का नाम महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने अपनी पुस्तक 'विन्ध्य के आदिवासियों के लोक गीत' में रीवाँ के आस-पास जंगल में रहने वाले लोगों के लोक गीतों का संकलन किया। इन्होंने अपनी दूसरी कृति 'विन्ध्य प्रदेश के लोक गीत' में करमा लोक गीतों का संग्रह किया। 'आगे गेहूँ पीछे धान' नामक पुस्तक में इन्होंने बघेलखण्ड की लोकोक्तियों का संकलन किया है। 'भुँइयाँ परे हैं लाल' में इन्होंने बघेलखण्डी सोहरों पर प्रकाश डाला है। श्री लखन प्रकाश 'उरगेश' ने पुस्तक 'बघेली लोक गीत' लिखते हुए इसमें विभिन्न लोक गीतों का संकलन किया है। डॉ0 रामदास प्रधान ने 'बघेलखण्ड की लोकोक्तियाँ, मुहावरे और लोक-कथाएँ' शीर्षक पर शोध कार्य किया है। श्री जगदीश चतुर्वेदी की कृति 'बघेली लोक साहित्य' में लोक साहित्य के विविध अंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। डॉ0 भगवती प्रसाद शुक्ल के शोध प्रबन्ध 'बघेली भाषा और साहित्य' के दूसरे भाग में बघेली के लोक साहित्य और उसकी विविध विधाओं पर प्रकाश डाला गया है। इन्होंने 'बघेली लोक रागनी' में बघेली लोक गीतों के संगीत पक्ष को उजागर किया है। श्री राम प्रताप सक्सेना ने भी लोक कथाओं का संकलन किया है।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य – यह पूर्वी हिन्दी की एक बोली है। यह रायगढ़, सरगुजा, बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, बस्तर जिलों में बोली जाती है। छत्तीसगढ़ को पुरातन समय में दण्डकारण्य कहा जाता था। इसके पूर्वी भाग को महाकोशल या दक्षिण कोशल कहा गया। प्राचीन समय में यहाँ 36 की संख्या में गढ़ होने की बात कही गई। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में सबसे अधिक कार्य डॉ0 श्यामाचरण दूबे ने किया। इन्होंने लोक गीतों का परिचय देते हुए अंग्रेजी अनुवाद भी सम्पादित किया। इस प्रकार इन्होंने 'छत्तीसगढ़ी और उसका साहित्य' नामक पुस्तिका में इस बोली का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। श्री चन्द्रकुमार अग्रवाल ने 'छत्तीसगढ़ी लोक कथाएँ' नामक पुस्तक में छत्तीसगढ की लोक कथाओं का संकलन किया है। कमल श्रीवास्तव, श्रीमती कुन्तल गोयल, श्यामलाल चतुर्वेदी, दयाशंकर शुक्ल आदि ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया है। छत्तीसगढी लोक साहित्य के क्षेत्र में शोध करने वालों में डॉ0 वैरियर एल्विन का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इन्होंने जन-जातियों के लोक साहित्य को पूरी तरह जानने के लिए उनके बीच आश्रम बनाकर रहते हुए एक वनवासी कन्या से विवाह भी किया। इस संबंध में इनके दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं- 'फोक सांग्स ऑफ छत्तीसगढ' और 'फोक टेल्स ऑफ महाकोशल'।

'श्री हेमनाथ यदु, कबीरदास के शिष्य धर्मदास को छत्तीसगढ़ी का प्रथम कवि मानते हैं। समीक्षक डॉ. विनय पाठक का मत है कि 'चौका गीत' एक लोक भजन है तथा धर्मदास के पद जिस युग में मिलते हैं, उस समय छत्तीसगढ़ी भाषा स्थापित नहीं हो पाई थी। अनेक विद्धानों ने पंडित गोपाल मिश्र, श्री माखन मिश्र एवं बाबू रेवाराम (सिंहासन बत्तीसी) को प्रथम कवि मानते हैं, परन्तु डॉ. विनय पाठक के मतानुसार, छत्तीसगढ़ी का पुट इनकी रचनाओं में कम दिखाई देता हैं। डॉ. नरेन्द्र देव शर्मा ने पं. सुंदरलाल शर्मा (दानलीला 1912) को प्रथम कवि स्वीकारा है, जबकि नंद किशोर तिवारी ने पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय को छत्तीसगढ़ी काव्य के प्रथम प्रणेता के आसन पर विराजित करते हैं। इसी तारतम्य में दयाशंकर शुक्ल ने भी 1908-09 में प्रकाशित लोचन प्रसाद पाण्डेय की 'छत्तीसगढ़ी कविता' को प्रथम रचना अभिसिक्त किया है। डॉ. विनय पाठक ने 1904 में रचित 'शिवायन' को छत्तीसगढ़ी की प्रथम काव्य कृति और नरसिंह दास (जांजगीर जिले के ग्राम तुलसी निवासी) को प्रथम कवि प्रमाणित किया है।'[2]

कपिल नाथ कश्यप जी द्धारा रचित 'श्री रामकथा, श्री कृष्ण कथा और महाभारत कथा' छत्तीसगढ़ी काव्य जगत के अनंताकाश में बिखरे हुए नक्षत्रों के समान है, जिसका सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक आभामण्डल आगत-विगत दोनों छोरों को आभासित करता है। ये तीनों रचनाएँ काव्य जगत के अमूल्य धरोहर हैं। इसके अतिरिक्त नूतन प्रसाद शर्मा जी का 'गरीबा' महाकाव्य और शकुन्तला वर्मा का 'कुमार संभव', छत्तीसगढ़ी महाकाव्य के रूप में चर्चित हैं। शिवशंकर शुक्ल कृत 'रधिया' (1969), लखनलाल गुप्त कृत 'सरग ले डोला आईस' (1969), डॉ. विनय कुमार पाठक रचित 'छत्तीसगढ़ी लोक कथा' (1970), कपिलनाथ कश्यप कृत 'डहर के कांटा', डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा कृत 'सुसक झन कुररी सुरता लेय एवं 'तिरिया जनम झनि देय', पं. श्यामलाल चतुर्वेदी कृत 'भोलवा भेलाराम बनिस' (1995), डॉ. राजेन्द्र सोनी कृत 'खोरबहरा तोला गांधी बनाबोन' (1981), महेतराम साहू रचित 'हमरे भीतरी सब कुछु हेय व 'आंसु में फिले अंचरा', परदेशी राम वर्मा विरचित 'रमिया और केतकी', पं. सीताराम मिश्र कृत 'सुरहि गैया' तथा कृष्ण कुमार शर्मा, सत्यभामा आडिल आदि की रचनाएँ छत्तीसगढ़ी कहानी की चर्चित एवं प्रतिष्ठित कृतियाँ हैं। छत्तीसगढ़ी लोक नाट्यों में गम्मत, रहस, रास या रासलीला, एवं मुरिया जनजाति की एक शिकार नाटिका माओपाटा का मंचन किया जाता है। छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं में चंदैनी के कहिनी, रमायन के कथा, ढ़ोला मारू के कहिनी, हीरू के कहिनी, सुरही गैया, चुरकी-भुरकी की कहानी, फूलबासन की कथा, सुसक झन कुररी सुरता ले, डोकरी के कहिनी, भोलवा भोलाराम बनिस, मनखे ला कतका भुंईया चाही, हाय रे मोर कसूर तंय नही दूसर, रधिया आदि उल्लेखनीय हैं।

मालवी लोक साहित्य – यह मध्यप्रदेश में स्थित धार, झाबुआ, रतलाम, देवास, इंदौर, उज्जैन, मंदसौर, सीहोर, शाजापुर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा जिले में बोली जाती है। मालवा जनपद में ही प्रसिद्ध महाराजा विक्रमादित्य ने शासन किया था। स्टीफन हिस्लप ने मालवा क्षेत्र के लोक साहित्य की प्रचुर सामग्री का संकलन किया था परन्तु उन सामग्रियों का प्रकाशन आर. सी. टेम्पुल के द्धारा उसकी मृत्यु के बाद ही हो सका। सन् 1929 ई. में पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी 'कविता कौमुदी' भाग - 5 (ग्राम गीत) में कुछ मालवी लोक गीतों का संकलन किया है। जी. आर. प्रधान ने भी कुछ लोक गीतों का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया है। मालवी लोक गीतों, कथाओं और गाथाओं के संकलन में डॉ0 श्याम परमार और डॉ0 चिन्तामणी उपाध्याय ने पूरा समय दिया। डॉ0 परमार ने 'मालवी कविताएँ' नामक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है। इनका 'मालवी लोक साहित्य' शीर्षक से इस क्षेत्र में प्रथम शोध प्रबन्ध भी प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ में पवाड़ा लोक गाथा, लावनी, लोक नाट्य (माँच), लोक कला (माँडना, चित्रावण, साँझी, मेहंदी, भात और गोदना) का परिचय मिलता है। डॉ0 चिन्तामणी उपाध्याय ने शोध प्रबन्ध 'मालवी लोक गीत : एक विवेचनात्मक अध्ययन' लिखते हुए बालकों, स्त्रियों और पुरूषों के लोक गीतों का अलग-अलग वर्गीकरण प्रस्तुत किया। डॉ0 शिव कुमार 'मधुर' ने लोक नाट्य पर शोध कार्य किया है। डॉ0 परमार ने

'लोकधर्मी नाट्य परम्परा' में मालवा के माच, ख्याल, इनके प्रवर्तकों, नौटंकी, भगत, और स्वांग का विवेचन किया है। मालकम ने 'मेंमायर्स ऑफ सेण्ट्रल इण्डिया' के कुछ खण्डों में तथा डॉ0 श्याम परमार, तेज कुमार बम, प्यारे लाल, डॉ0 बसंती लाल बम आदि ने भी कुछ लोक कथाओं का संकलन किया है। मालवी में लोकोक्ति, कवात, कवाड़ा और पहेली अथवा प्याली कहलाती है। श्री रतन लाल मेहता ने 'मालवी कहावतों' नाम से मालवी कहावतों को संग्रह किया है। पं0 सूर्य नारायण व्यास की प्रेरणा से उज्जैन में 'मालव लोक साहित्य परिषद्' की स्थापना हुई। इस संस्था ने मालवी लोक साहित्य के विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

निमाड़ी लोक साहित्य – यह मालवी की उपबोली है। यह मुख्यत: पूर्वी निमाड़ (खण्डवा) और पश्चिमी निमाड़ (खरगोन) जिलों में बोली जाती है। निमाड़ मालवा राज्य का दक्षिणी भाग है। मालवी भाषामें नीचे के भाग को निमानी कहते हैं। इसलिए यह बोली निमाड़ी कही गई। इस क्षेत्र में पं0 राम नारायण उपाध्याय ने सर्वश्रेष्ठ कार्य करते हुए 45 लोक गीतों का संग्रह कर 'निमाड़ी लोक गीत' लिखा। इनकी दूसरी पुस्तक 'जब निमाड़ गाता है' में संस्कार तथा व्रत संबंधी गीतों का संकलन है। इन्होंने बालोपयोगी लोक कथा भी लिखा है। पं0 उपाध्याय ने निमाड़ की खेती और वर्षा संबंधी कहावतों तथा व्यंग्य और उपदेशात्मक कहावतों को समाहित करते हुए 'निमाड़ी लोक कहावतें' नामक पुस्तक भी लिखी है। इनकी पुस्तक 'निमाड़ी का लोक साहित्य और संस्कृति' में निमाड़ी लोक कला, लोक संगीत, लोक वाद्य, लोक विश्वास आदि पर प्रकाश डाला गया है। इनकी 'निमाड़ी का सांस्कृतिक इतिहास' नामक पुस्तक में लोक कथा, लोक गीत, कहावतें आदि पर विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है। डॉ0 कृष्ण लाल हंस ने अपनी पुस्तक 'निमाड़ी लोक गीत' में लोक गीतों का संग्रह किया है। इन्होंने दो भागों में निमाड़ी लोक कथाओं का प्रकाशन भी किया है। इनका शोध प्रबंन्ध 'निमाड़ी भाषा और साहित्य' एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें निमाड़ी गीत और कहानियों की शोधपरक विवेचना मिलती है।

राजस्थानी लोक गीत – राजस्थानी पाँच बोलियों का समूह है – मारवाड़ी, मेवाती, ढूँढ़ाड़ी, मालवी और बागड़ी। परन्तु मारवाड़ी ही मानक बोली है। श्री खेताराम माली ने प्रारम्भिक प्रयास करते हुए 'मारवाड़ी गीत संग्रह', 'मारवाड़ी गीत', 'असली मारवाड़ी गीत संग्रह' और 'वृहत् मारवाड़ी गीत संग्रह' लिखा। इसके पश्चात् श्री जगदीश सिंह गहलोत ने 100 गीतों के संकलन के रूप में 'मारवाड़ी ग्राम गीत' और श्री गंगा प्रसाद कमठान ने 'राजस्थानी लोक गीत' भाग 1 और 2 लिखते हुए लोक गीतों का सन्दर्भ सहित विवेचना प्रस्तुत की। मेहता रघुनाथ सिंह ने 'जैसलमेरीय संगीत रत्नाकर', सरदार मल थानवी ने 'मरुधर गीतमाला' और 'घुड़ला', श्री पुरूषोत्तम दास पुरोहित ने 'पुस्करणों के सामाजिक गीत' तथा पं0 राम नरेश त्रिपाठी ने 'मारवाड़ के मनोहर गीत' पुस्तकों में प्रदेश के लोक गीतों का काफी अच्छा संग्रह प्रस्तुत किया है। लोक गीत के क्षेत्र में सूर्य करण पारीक, नरोत्तम दास स्वामी और ठाकुर राम सिंह नामक तीनों विद्धानों ने संयुक्त रूप से 'राजस्थान के लोक गीत' नामक पुस्तक दो भागों में संपादित कर इसमें 230 लोक गीतों जिसमें संस्कार गीत भी हैं और लोक गाथाओं को समावेश किया है। राजस्थान के ग्रामीण गीतों को संकलित करते हुए श्री गणपति स्वामी और सूर्यकरण पारीक ने 'राजस्थान के ग्राम गीत' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। श्री निहालचन्द वर्मा ने 'मारवाड़ी गीत', श्री ताराचन्द ओझा ने 'मारवाड़ी गीत संग्रह', श्री पुरूषोत्तम लाल मेनारिया ने 'राजस्थानी लोक गीत' तथा श्री मदनलाल वैश्य ने 'मारवाड़ी गीत माला' लिखकर इस दिशा में श्रेष्ठ कार्य किया है। डॉ0 स्वर्णलता अग्रवाल ने राजस्थानी लोक गीतों पर शोध कार्य किया है एवं रानी लक्ष्मी कुमारी चुड़ावत ने 'राजस्थानी लोक गीतों' का सम्पादन किया है। इसके अतिरिक्त श्री विजयदान देथा ने छह भागों में भाई–बहन, ससुराल–पीहर के गीतों तथा प्रेम गीतों का सम्पादन किया है।

श्री मोहनलाल पुरोहित ने 'राजस्थानी व्रत कथाएँ' तथा 'राजस्थानी प्रेम कथाएँ' नाम से लोक कथाओं का संग्रह प्रकाशित किया है। डॉ0 कन्हैया लाल सहल ने 'नटो तो कहो मत' संकलन में लोक कथाओं को स्थान दिया है। 'मरु भारती' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित श्री गोविन्द अग्रवाल का 'राजस्थानी लोक–कथा कोश' प्रदेश के लोगों के जन–जीवन की झांकी प्रस्तुत करता है। श्री विजयदान देथा ने 'लोक संस्कृति' पत्रिका के माध्यम से अनेक राजस्थानी लोक कथाओं का प्रकाशन किया है। 'बात' राजस्थानी लोक साहित्य का एक रोचक अंग है। शैली की रोचकता, पद्य का प्रयोग, भाषा में चित्रमयता, लोकोक्ति–मुहावरा का प्रयोग इनकी विशेषताएँ हैं। राजस्थानी 'बातों' में वीरता का वर्णन अधिक हुआ है। राजस्थान के वीर, योद्धा, दानी, संत, सती, विदुषी और वीरांगनाओं से संबंधित बातें यहाँ घर–घर में फेली हुई हैं। सूर्यकरण पारीक ने 'राजस्थानी बातों' नामक ग्रन्थ में अनेक वीरों की 'बातों' का संकलन किया है। रानी लक्ष्मी कुमारी चुड़ावत ने 'कैरे चकवा बात' और 'सिर ऊँचा ऊँचा गढ़ा' नामक पुस्तक में क्रमश: 16 और 30 बातों का संग्रह किया है। ये सभी आख्यानें ऐतिहासिक हैं। श्री विजयदान देथा ने 'बाताँ री फुलवाडी' नाम से दास भागों में बातों का प्रकाशन किया है।

श्री गणपति स्वामी ने 'जीणमाता–रो गीत' लोक गाथा के कुछ अंशों का प्रकाशन 'राजस्थान भारती' और 'मरु भारती' में किया है। इस गाथा में भाई–बहन का निश्छल प्रेम अभिव्यक्त हुआ है। लोक गाथा के क्षेत्र में ठाकुर सौभाग्य सिंह ने 'जीणमाता' पुस्तक का भी सम्पादन किया है। सूर्य करण पारीक, नरोत्तम दास स्वामी और ठाकुर राम सिंह नामक विद्धानत्रयी ने संयुक्त रूप से प्रसिद्ध गाथा 'ढोला मारू रा दूहा' का सम्पादन बड़े ही मनोयोग से किया है। यह एक सरस प्रेम गाथा है, जिसमें वियोग श्रृंगार रस की प्रधानता है। डॉ0 कन्हैया लाल सहल ने वीरता की 12 लोक गाथाओं का संग्रह 'राजस्थानी वीर गाथाओं' में किया है। इन्होंने 'निहाल दे सुल्तान' की गाथा को तीन भागों में हिन्दी में प्रकाशित किया है। श्री चन्ददान चारण ने गोगा चौहान की गाथा को 18 पाठों में प्रकाशित किया है। गोगा जी की गणना राजस्थान के प्रसिद्ध पाँच वीरों में की जाती है। इसे 'जाहर पीर' भी कहा जाता है। सर्पो के देवता होने के कारण इन्हें प्रबल देवता के रूप में पूजा जाता है। राजस्थानी समाज की रीति–रिवाज और धार्मिक विश्वास को प्रकट करती गाथा 'बगडावत' का प्रकाशन डॉ0 कृष्ण कुमार शर्मा के द्वारा किया गया है। इस गाथा का हिन्दी अनुवाद रानी लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत ने किया है। बगडावतों के कुलगुरु देव नारायण से संबंधित गाथा 'देव नारायण रो भारत' का सम्पादन डॉ0 महेन्द्र भानावत ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय : भारत में लोक साहित्य, साहित्य भवन प्रा0 लि0 इलाहाबाद, संस्करण : 1998, पृ0 140
2. डॉ0 रमेश टण्डन : लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य (छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास एवं प्रवृत्तियाँ – श्रीमती पुष्पांजलि दासे), सर्वप्रिय प्रकाशन कश्मीरी गेट दिल्ली, संस्करण : 2020, पृ0 104